डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 06.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 19)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"उनमुनि सों मन लागिया...
.... अलख निरंजन राय"।

प्रस्तुत पद्यावतरण ज्ञानमार्गी निर्गुण धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर द्वारा रचित है। यह साखी हमारी पाठ्यपुस्तक पुस्तक 'कबीर वचनावली' में 'परिचय' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

प्रस्तुत साखी में संत कवि कबीर का कहना है कि मेरा मन उन्मन से लग गया और वह गगन अर्थात् शून्य देश तक पहुँच गया। वहाँ उसने चंद्र-विहीन अर्थात दिव्य चंद्रिका देखी और उस शून्य देश के राजा अलक्ष्य और निरंजन अर्थात निर्लिप्त ब्रह्म को देखा। कवि के कहने का भाव यह है कि मेरा मन परमतत्त्व की ओर उन्मुख है। वह शून्य सशस्त्रदल कमल में पहुँच गया है। वहाँ मैंने चंद्रमा के बिना चाँदनी के दर्शन किये तथा निर्गुण, निराकार, निर्लिप्त ईश्वर के दर्शन भी हुए। उस निष्कलुष ब्रह्म सत्ता का साक्षात्कार इंद्रियों की क्षमता से परे है। वस्तुतः यहाँ उन्मन उस अवस्था का सूचक शब्द है जहाँ संकल्प-विकल्पात्मक चंचल मन शांत हो जाता है और उसमें उच्चतर चेतना का आविर्भाव होता है। 'गगन' का अर्थ है शून्य, जिसे संतों-योगियों की पारिभाषिक शब्दावली में सहस्रार चक्र भी कहा जाता है। इसे सहज अवस्था भी कहते हैं। 'अलख निरंजन' योगियों द्वारा प्रयुक्त परमात्मा की संज्ञा है जिसका अभिप्राय है त्रिगुणों के प्रभाव से रहित या कालिमा रहित शुद्ध ब्रह्म। यहाँ विभावना अलंकार की योजना देखते ही बनती है। स्पष्ट ही इस साखी में योग साधना का प्रभाव परिलक्षित होता है।